



उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष बच्चों के समायोजन का अध्ययन

धर्मेन्द्र वंश

शोधार्थी

एन0एम0एस0एन0 दास

(पी0जी0) कालेज

बदायूँ, उ0प्र0।

सम्बद्ध : महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।

डा0 मनवीर सिंह

प्रोफेसर

एन0एम0एस0एन0 दास

(पी0जी0) कालेज

बदायूँ (उ0प्र0)।

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22663713>

सारांश

शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है और विद्यालय उसके सामाजिक, भावनात्मक, बौद्धिक तथा व्यवहारात्मक विकास का प्रमुख केंद्र है। विद्यालयी जीवन में बालक का समायोजन उसके शैक्षिक विकास, आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता तथा व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करता है। समावेशी शिक्षा के अंतर्गत सामान्य एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समान विद्यालयी वातावरण में शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया जाता है। विशेष बच्चों के प्रभावी समायोजन के लिए सहायक उपकरण, उपयुक्त शिक्षण विधियाँ, संवेदनशील शिक्षक, सहयोगी सहपाठी तथा सकारात्मक विद्यालयी वातावरण आवश्यक हैं। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों तथा छात्राओं के समायोजन की तुलना करना है। अध्ययन में सामान्य बच्चों से आशय ऐसे विद्यार्थियों से लिया गया है जिनमें कोई प्रमाणित विशेष आवश्यकता नहीं है, जबकि विशेष बच्चों से आशय ऐसे विद्यार्थियों से है जिन्हें शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, अधिगम अथवा अन्य विशेष आवश्यकताओं के कारण अतिरिक्त शैक्षिक सहायता की आवश्यकता होती है। समायोजन से आशय विद्यालयी, सामाजिक, पारिवारिक, संवेगात्मक एवं व्यक्तिगत परिस्थितियों के साथ प्रभावी एवं संतुलित सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता से है। अध्ययन हेतु कुल 500 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया तथा समायोजन के मापन के लिए सीमा रानी एवं डॉ. बसन्त बहादुर सिंह द्वारा निर्मित समायोजन परीक्षण का प्रयोग किया गया। शोध में निष्कर्ष रूप में पाया कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्यशब्द - उच्च प्राथमिक स्तर, सामान्य विद्यार्थी, विशेष विद्यार्थी, समायोजन

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा केवल ज्ञान, कौशल और सूचनाओं के अर्जन तक सीमित नहीं है बल्कि यह व्यक्ति को सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक तथा व्यवहारात्मक रूप से विकसित करने का कार्य भी करती है। विद्यालय बालक के विकास का वह महत्वपूर्ण सामाजिक परिवेश है जहाँ वह अपने परिवार के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के साथ रहना, सहयोग करना, विचारों का आदान-प्रदान करना तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालना सीखता है। इस दृष्टि से विद्यालय में बालकों का समायोजन अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन जाता है। प्रत्येक बालक की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यक्तिगत विशेषताएँ एक-दूसरे



से भिन्न होती हैं इसलिए सभी बच्चों से समान व्यवहार करने के स्थान पर उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं और कठिनाइयों को समझना आवश्यक है। भारतीय विद्यालयों में सामान्य बच्चों के साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को भी शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने पर निरंतर बल दिया जा रहा है। समावेशी शिक्षा की अवधारणा इसी विचार पर आधारित है कि प्रत्येक बालक को उसकी क्षमता, आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार समान एवं सम्मानजनक शैक्षिक अवसर प्राप्त होने चाहिए। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को केवल अलग विद्यालयों या विशेष संस्थानों तक सीमित रखने के बजाय उन्हें सामान्य विद्यालयों में अन्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना समावेशी शिक्षा की महत्वपूर्ण विशेषता है। इससे विशेष बच्चों में आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता और स्वतंत्रता की भावना विकसित होती है वहीं सामान्य बच्चों में सहयोग, संवेदनशीलता, सहानुभूति, स्वीकार्यता और विविधता के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न होती है। उच्च प्राथमिक स्तर शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण चरण है। सामान्यतः इस स्तर पर बालक कक्षा छः से आठ तक अध्ययन करते हैं। यह अवस्था बालकों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इस अवस्था में बालक परिवार से बाहर अपने मित्रों, सहपाठियों, शिक्षकों और विद्यालयी समुदाय के साथ अधिक सक्रिय रूप से जुड़ता है। उसकी सामाजिक पहचान विकसित होने लगती है और वह अपने साथियों के व्यवहार, विचारों तथा प्रतिक्रियाओं से प्रभावित होता है इसलिए उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालकों के समायोजन का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है। समायोजन का अर्थ व्यक्ति द्वारा अपने वातावरण, परिस्थितियों तथा अन्य व्यक्तियों के साथ संतुलित और प्रभावी संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया से है। जब कोई बालक विद्यालय के वातावरण, शिक्षकों, सहपाठियों, पाठ्यक्रम, विद्यालयी नियमों और सामाजिक परिस्थितियों के साथ स्वयं को उचित रूप से ढाल लेता है, तब उसे विद्यालय में समायोजित कहा जा सकता है। इसके विपरीत यदि बालक विद्यालयी वातावरण में स्वयं को असुरक्षित, अकेला, अस्वीकारित या असहज अनुभव करता है, तो उसके समायोजन में कठिनाई हो सकती है। समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है, जो बालक के व्यक्तित्व, परिवार, विद्यालय, साथियों और सामाजिक वातावरण से प्रभावित होती है। विद्यालयी समायोजन के अनेक आयाम हैं। इनमें शैक्षिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन तथा विद्यालयी वातावरण के साथ समायोजन प्रमुख हैं। शैक्षिक समायोजन का संबंध बालक की पढ़ाई, कक्षा-कार्य, गृहकार्य, परीक्षा तथा सीखने की गतिविधियों से है। सामाजिक समायोजन का संबंध सहपाठियों, शिक्षकों तथा विद्यालय के अन्य सदस्यों के साथ संबंध स्थापित करने से है। भावनात्मक समायोजन में बालक की भावनाओं को समझना, नियंत्रित करना तथा परिस्थितियों के अनुरूप सकारात्मक प्रतिक्रिया देना शामिल है। इसी प्रकार विद्यालयी वातावरण के साथ समायोजन में विद्यालय के नियमों, अनुशासन, दिनचर्या तथा विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता शामिल होती है। सामान्य बच्चों के समायोजन को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं। इनमें पारिवारिक वातावरण, माता-पिता का व्यवहार, आर्थिक स्थिति, विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का व्यवहार, सहपाठियों का सहयोग, व्यक्तिगत रुचियाँ तथा शैक्षिक उपलब्धि प्रमुख हैं। यदि बच्चे को परिवार में प्रेम, सुरक्षा और प्रोत्साहन मिलता है तथा विद्यालय में सहयोगात्मक वातावरण उपलब्ध होता है, तो उसके समायोजन की संभावना अधिक होती है। इसके विपरीत पारिवारिक तनाव, उपेक्षा, विद्यालय का नकारात्मक वातावरण या साथियों द्वारा अस्वीकार किए जाने जैसी परिस्थितियाँ बालक के समायोजन को प्रभावित कर सकती हैं। विशेष बच्चे अथवा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में समायोजन का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों में शारीरिक, दृष्टि, श्रवण, बौद्धिक, सीखने, व्यवहारात्मक या अन्य प्रकार की आवश्यकताएँ हो सकती हैं। इन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताएँ सामान्य बच्चों से कुछ अलग हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित बालक को शिक्षण सामग्री के विशेष रूप की आवश्यकता हो सकती है, श्रवण बाधित बालक को संचार के वैकल्पिक माध्यमों की आवश्यकता हो सकती है तथा सीखने में कठिनाई वाले बालक को अतिरिक्त समय और उपयुक्त शिक्षण विधियों की आवश्यकता हो सकती है। इसलिए इन बच्चों के प्रभावी समायोजन के लिए केवल



विद्यालय में प्रवेश देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यालयी वातावरण को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप संवेदनशील एवं अनुकूल बनाना भी आवश्यक है। विशेष बच्चों के समायोजन में सहपाठियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालक अपने साथियों से सामाजिक व्यवहार सीखता है। यदि सामान्य बच्चे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को स्वीकार करते हैं, उनके साथ खेलते हैं, कक्षा गतिविधियों में सहयोग करते हैं और उन्हें समान अवसर प्रदान करते हैं, तो विशेष बच्चों में अपनत्व की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत उपहास, भेदभाव, अलगाव या नकारात्मक दृष्टिकोण विशेष बच्चों के भावनात्मक एवं सामाजिक समायोजन को प्रभावित कर सकता है। इसलिए विद्यालय में ऐसा वातावरण विकसित किया जाना आवश्यक है जिसमें प्रत्येक बालक को सम्मान और समानता प्राप्त हो। शिक्षक विशेष बच्चों के समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक का व्यवहार बालक की आत्मधारणा और विद्यालय के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। यदि शिक्षक विशेष बच्चे की कठिनाइयों को समझते हुए धैर्य, संवेदनशीलता और सहयोग का व्यवहार करता है, तो बालक स्वयं को सुरक्षित अनुभव करता है। शिक्षक को कक्षा में विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चों को साथ लेकर चलने के लिए विविध शिक्षण विधियों, गतिविधि-आधारित शिक्षण, सहकारी अधिगम तथा व्यक्तिगत सहायता का प्रयोग करना चाहिए। इससे कक्षा में सभी बच्चों की सहभागिता बढ़ती है और समावेशी वातावरण का निर्माण होता है। समावेशी शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी समानता, समावेशन और प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य केवल विशेष बच्चों को सामान्य विद्यालय में शामिल करना नहीं है, बल्कि विद्यालय की संरचना, पाठ्यचर्या, शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन व्यवस्था को इस प्रकार विकसित करना है कि सभी बच्चे सार्थक रूप से सीख सकें। इस दृष्टि से बच्चों का समायोजन समावेशी शिक्षा की सफलता का एक महत्वपूर्ण संकेतक माना जा सकता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर सामान्य एवं विशेष बच्चों के समायोजन की तुलना करना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस अवस्था में बच्चों की सामाजिक अपेक्षाएँ और शैक्षिक आवश्यकताएँ तेजी से विकसित होती हैं। विशेष बच्चे यदि विद्यालय में स्वयं को अन्य बच्चों से अलग अनुभव करते हैं, तो उनके आत्मविश्वास, शैक्षिक सहभागिता और सामाजिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। दूसरी ओर, यदि सामान्य बच्चे विशेष बच्चों के साथ सहजता से रहते हैं, तो उनमें सामाजिक संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों का विकास होता है। अतः दोनों समूहों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन विद्यालयी वातावरण की प्रभावशीलता को समझने में सहायता कर सकता है। इस प्रकार का अध्ययन शिक्षकों और विद्यालय प्रशासन के लिए भी उपयोगी हो सकता है। यदि अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि विशेष बच्चों का सामाजिक या भावनात्मक समायोजन सामान्य बच्चों की तुलना में कम है, तो विद्यालय उनके लिए विशेष सहयोगात्मक कार्यक्रम विकसित कर सकता है। इसी प्रकार यदि किसी क्षेत्र में सामान्य और विशेष बच्चों के समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाता, तो यह समावेशी विद्यालयी वातावरण की सकारात्मक स्थिति को दर्शा सकता है। अध्ययन के परिणामों के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण, परामर्श सेवाओं, सहपाठी सहयोग कार्यक्रमों और विद्यालयी सुविधाओं में आवश्यक सुधार किया जा सकता है। बालक के समायोजन में परिवार और समुदाय की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। परिवार विशेष बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है तो बालक में आत्मविश्वास बढ़ता है। अभिभावकों और शिक्षकों के बीच नियमित संवाद होने से बालक की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। इसी प्रकार समाज में दिव्यांगता और विशेष आवश्यकताओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना भी आवश्यक है। विद्यालय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है और विद्यालय में विकसित होने वाला समावेशी व्यवहार व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं है, बल्कि प्रत्येक बालक के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करना है। इसके लिए विद्यालय को ऐसा वातावरण प्रदान करना आवश्यक है जहाँ विविध क्षमताओं और पृष्ठभूमियों वाले बच्चे बिना किसी भेदभाव के साथ सीख सकें। सामान्य और विशेष बच्चों का साथ-साथ अध्ययन करना सामाजिक समावेशन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे



बच्चों को यह सीखने का अवसर मिलता है कि शारीरिक, मानसिक या सीखने की क्षमताओं में भिन्नता होने के बावजूद प्रत्येक व्यक्ति सम्मान और समान अवसर का अधिकारी है। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य एवं विशेष बच्चों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जा सकता है कि दोनों प्रकार के बच्चों का विद्यालयी वातावरण में समायोजन किस स्तर तक है तथा उनके समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है या नहीं। अध्ययन में सामाजिक, भावनात्मक, शैक्षिक तथा विद्यालयी समायोजन जैसे विभिन्न पक्षों को सम्मिलित किया जा सकता है। इसके साथ ही लिंग, ग्रामीण-शहरी क्षेत्र, विद्यालय के प्रकार तथा अन्य प्रासंगिक चर के आधार पर भी समायोजन की स्थिति का विश्लेषण किया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

“उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष बच्चों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन” वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक विषय है। समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक बालक को उसकी क्षमता, आवश्यकता, रुचि एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं के बावजूद समान शैक्षिक अवसर प्राप्त हों। उच्च प्राथमिक स्तर पर बालकों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं नैतिक विकास तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में बालक विद्यालय, शिक्षक तथा सहपाठियों के साथ किस प्रकार समायोजन स्थापित करता है, इसका प्रभाव उसके शैक्षिक विकास और व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ता है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में यह विषय और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि उन्हें सामान्य बच्चों की अपेक्षा विद्यालयी वातावरण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया तथा सामाजिक संबंधों में अतिरिक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। समायोजन से आशय व्यक्ति द्वारा अपने वातावरण, परिस्थितियों तथा अन्य व्यक्तियों के साथ संतुलित एवं संतोषजनक संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया से है। विद्यालयी जीवन में बालक को अनेक प्रकार की परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। उसे शिक्षक के निर्देशों का पालन करना, सहपाठियों के साथ सहयोग करना, कक्षा की गतिविधियों में भाग लेना, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना तथा विद्यालय के नियमों के अनुरूप व्यवहार करना पड़ता है। यदि बालक इन परिस्थितियों के साथ प्रभावी ढंग से सामंजस्य स्थापित कर पाता है, तो उसका विद्यालयी जीवन अधिक सुखद एवं प्रभावी बनता है। इसके विपरीत, समायोजन की कमी से बालक में तनाव, हीन भावना, सामाजिक दूरी, आक्रामकता, संकोच अथवा विद्यालय के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सकता है। विशेष बच्चों के लिए समायोजन की समस्या सामान्य बच्चों की तुलना में अधिक जटिल हो सकती है। शारीरिक, दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, बौद्धिक, अधिगम संबंधी अथवा अन्य विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को विद्यालयी वातावरण में अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि विद्यालय में आवश्यक संसाधन, सहयोगी वातावरण, संवेदनशील शिक्षक तथा सकारात्मक सहपाठी व्यवहार उपलब्ध नहीं है, तो विशेष बच्चों के लिए कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेना कठिन हो सकता है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि सामान्य एवं विशेष बच्चे विद्यालयी वातावरण में किस स्तर तक समायोजित हो पा रहे हैं। अध्ययन का महत्व विद्यालय प्रशासन एवं नीति-निर्माताओं के लिए भी है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यालयों में आवश्यक सुविधाओं, संसाधनों, सहायक उपकरणों, विशेष शिक्षकों तथा परामर्श सेवाओं की आवश्यकता का आकलन किया जा सकता है। इससे विद्यालयों को अधिक बाल-केंद्रित एवं समावेशी बनाने में सहायता मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की समावेशी एवं समानतापूर्ण शिक्षा की भावना के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य किसी भी बच्चे को उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं या अक्षमताओं के कारण शैक्षिक अवसरों से वंचित करना नहीं है। इसलिए सामान्य एवं विशेष बच्चों के बीच स्वस्थ सामाजिक संबंध, समान अवसर और सहभागिता सुनिश्चित करना आवश्यक है। समायोजन का अध्ययन इस दिशा में विद्यालयों की वास्तविक स्थिति को समझने का माध्यम बन सकता है। अतः स्पष्ट है कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य एवं विशेष बच्चों के समायोजन का

तुलनात्मक अध्ययन केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित विषय नहीं है, बल्कि यह बच्चों के सामाजिक, संवेगात्मक, मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक विकास से जुड़ा हुआ व्यापक विषय है। इस अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलेगी कि दोनों वर्गों के बच्चे विद्यालयी वातावरण में किस प्रकार समायोजन कर रहे हैं, किन क्षेत्रों में कठिनाइयाँ हैं तथा उन कठिनाइयों को दूर करने के लिए किस प्रकार के शैक्षिक एवं सामाजिक प्रयास आवश्यक हैं। इस प्रकार अध्ययन के निष्कर्ष समावेशी, समानतापूर्ण, संवेदनशील एवं बाल-अनुकूल विद्यालयी वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

- मामास, डेली एवं शेली (2019) ने विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए सामाजिक रूप से उत्तरदायी कक्षा वातावरण का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि सकारात्मक सामाजिक वातावरण में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के सहपाठियों के साथ संबंध, मित्रता तथा कक्षा में जुड़ाव बेहतर हो सकता है।
- नोविकी (2019) ने सामान्य विद्यार्थियों द्वारा शारीरिक अक्षमता वाले बच्चों के सामाजिक समावेशन की धारणा का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि कुछ सामान्य विद्यार्थी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ बातचीत और मित्रता करने से बचते हैं। ऐसी स्थिति विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के सामाजिक समायोजन और विद्यालयी सहभागिता को प्रभावित कर सकती है।
- शूप-कास्टेलर एवं स्पूलर (2020) ने बौद्धिक अक्षमता वाले विद्यार्थियों के सहपाठी संबंधों की व्यवस्थित समीक्षा की। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के सहपाठी संबंध व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ-साथ कक्षा के वातावरण और सहपाठियों के व्यवहार से भी प्रभावित होते हैं।
- स्पोरर, लेनकाइट, बोसे एवं सहयोगियों (2020) ने समावेशी शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और सहपाठी संबंधों के बीच संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में वृद्धि होने पर सहपाठी संबंधों में भी सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे सकता है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के प्रति सहयोगात्मक एवं स्वीकारात्मक व्यवहार उनके सामाजिक समायोजन को मजबूत करता है।
- झोड, यिन एवं सहयोगियों (2022) ने समावेशी वातावरण तथा दिव्यांग बच्चों के प्रति सहपाठियों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि सकारात्मक समावेशी वातावरण तथा सहानुभूति विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होते हैं।
- डोउमा, डी बोअर एवं मिन्नार्ट (2024) ने विशेष आवश्यकता वाले तथा सामान्य विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा पर सहपाठी स्वीकृति और मित्रता के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि सहपाठियों द्वारा स्वीकृति विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा के विकास से संबंधित महत्वपूर्ण कारक है।
- गाम्बोआ एवं सहयोगियों (2024) ने विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले तथा सामान्य विद्यार्थियों में सहपाठी अस्वीकृति की तुलना की। अध्ययन में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों में सहपाठी अस्वीकृति अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। शोधकर्ताओं ने बताया कि लगातार सहपाठी अस्वीकृति विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास तथा विद्यालयी समायोजन के लिए चुनौती उत्पन्न कर सकती है।
- लॉपर एवं सहयोगियों (2026) ने प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में दिव्यांग सहपाठियों के प्रति दृष्टिकोण में सुधार लाने के लिए सामाजिक सहभागिता आधारित कार्यक्रम का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के दिव्यांग सहपाठियों के प्रति दृष्टिकोण में नियंत्रण समूह की तुलना में अधिक सकारात्मक परिवर्तन हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि योजनाबद्ध सामाजिक एवं भावनात्मक गतिविधियों के माध्यम से सामान्य विद्यार्थियों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति स्वीकृति, सहानुभूति और सहयोग की भावना विकसित की जा सकती है।



समस्या कथन

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष बच्चों के समायोजन का अध्ययन।

चरों का परिभाषीकरण

- सामान्य बच्चे - ऐसे विद्यार्थी जिनमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेगात्मक अथवा सामाजिक कार्यक्षमता से संबंधित कोई प्रमाणित विशेष आवश्यकता नहीं है और जो सामान्य विद्यालयी वातावरण में अध्ययन करते हैं।
- विशेष बच्चे - ऐसे विद्यार्थी जिनमें किसी प्रकार की शारीरिक, बौद्धिक, दृष्टि, श्रवण, सीखने अथवा अन्य विशेष आवश्यकताद्विद्वांगता के कारण सामान्य बच्चों की अपेक्षा अतिरिक्त शैक्षिक सहायता या अनुकूलन की आवश्यकता होती है।
- समायोजन - "समायोजन" से आशय इस अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की उस क्षमता से है जिसके द्वारा वे विद्यालयी, सामाजिक, पारिवारिक, संवेगात्मक एवं व्यक्तिगत परिस्थितियों के साथ प्रभावी एवं संतुलित सामंजस्य स्थापित करते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

1. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु 500 विद्यार्थियों (250 सामान्य एवं 250 विशेष विद्यार्थी) को शामिल किया गया है।

उपकरण

समायोजन परीक्षण - सीमा रानी एवं डा0 बसन्त बहादुर सिंह द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य क्रमांक 1:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
परिकल्पना क्रमांक 1:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या - 1

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों के समायोजन की स्थिति

छात्र	N	Mean	SD	T-Value	सार्थकता स्तर
सामान्य	130	32-36	2-83	0-009	No Significance
विशेष	130	32-92	3-02		

व्याख्या:- तालिका संख्या 1 में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य छात्रों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन 32.36 एवं 2.83 प्राप्त हुआ है जबकि विशेष छात्रों के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 32.92 एवं 3.02 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.009 प्राप्त हुआ है। जिससे पता चलता है कि कक्षा-कक्ष में सहायक उपकरण, ब्रेल, श्रवण यंत्र एवं विशेष शिक्षण सामग्री की व्यवस्था की जाती है, जिससे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को सीखने में सुविधा मिलती है। इसके अलावा, समावेशी पाठ्यचर्या, समूह गतिविधियों, सहयोगी अधिगम एवं व्यक्तिकेंद्रित शिक्षण पद्धतियों के माध्यम से सभी छात्रों के बीच समावेश की भावना विकसित की जाती है। हालांकि, शिक्षकों की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता एवं उचित प्रशिक्षण के अभाव में कई विद्यालयों में यह प्रक्रिया चुनौतियों से भरी होती है। इस स्थिति को सुधारने के लिए शिक्षकों के नियमित प्रशिक्षण, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा अभिभावकों एवं समाज की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है।

उद्देश्य क्रमांक 2:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना क्रमांक 2:- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या - 2

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं के समायोजन की स्थिति

छात्राएँ	N	Mean	SD	T-Value	सार्थकता स्तर
सामान्य	120	32-50	2-89	1-35	No Significance
विशेष	120	32-04	2-83		

व्याख्या:- तालिका संख्या 2 में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य छात्राओं के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन 32.50 एवं 2.89 प्राप्त हुआ है जबकि विशेष छात्राओं के समायोजन का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 32.04 एवं 2.83 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.35 प्राप्त हुआ है। जिससे पता चलता है कि विशेष छात्राओं के लिए उपयुक्त शिक्षण पद्धति, कक्षा में उनका आत्म-सम्मान बढ़ाने हेतु गतिविधियों का आयोजन, और समाज एवं अभिभावकों का सकारात्मक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। सरकार द्वारा समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु कई योजनाएँ लागू की गई हैं, जैसे- समग्र शिक्षा अभियान, दिव्यांग छात्रवृत्ति योजना आदि। यदि शिक्षकों, अभिभावकों, एवं विद्यालय प्रशासन द्वारा समन्वित प्रयास किए जाएँ, तो सामान्य एवं विशेष छात्राओं का प्रभावी समायोजन संभव हो सकता है, जिससे वे आत्मनिर्भर एवं सशक्त बन सकें।

निष्कर्ष

- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्रों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं विशेष छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मामास, सी., डेली, ए. जे., एवं शेली, एल. (2019). Socially responsive classrooms for students with special educational needs and disabilities. International Journal of Disability, Development and Education.



- नोविकी, ई. ए. (2019). How students without special needs perceive social inclusion of children with physical impairments in mainstream schools: A scoping review. *International Journal of Disability, Development and Education*, 66(3), 298–324.
- शूप-कास्टेलर, बी., एवं म्यूलर, सी. एम. (2020). Peer relationships of students with intellectual disabilities in special needs classrooms: A systematic review. *Journal of Research in Special Educational Needs*.
- स्पोरर, एन., लेनकाइट, जे., बोसे, एस., हार्टमैन, ए., एहलर्ट, ए., एवं निगे, एम. (2020). Students' perspective on inclusion: Relations of attitudes towards inclusive education and self-perceptions of peer relations. *International Journal of Educational Research*, 103, 101641.
- फू, डब्ल्यू., शियाओ, वाई., यिन, सी., एवं झोउ, टी. (2022). The relationship of inclusive climate and peers' attitude on children with disabilities in China: A mediating role of empathy. *Frontiers in Psychology*, 13, 1034232.
- डोउमा, आई., डी बोअर, ए., एवं मिनार्ट, ए. (2024). Seeing myself through the eyes of my peers: Explaining the self-concept of students with and without special educational needs through acceptance and friendship. *British Journal of Educational Psychology*, 94(2), 586–600.
- गाम्बोआ, पी., फ्रेइरे, एस., अतिका, ए., मोगारो, जे. एम., मोरेरा, एम. एफ., एवं वाज दा सिल्वा, एफ. (2024). Correlates of rejection by the peer group: A study comparing students with and without SEN. *International Journal of Inclusive Education*, 28(4), 381–401.
- लॉपर, एम. एफ., गोरेल, जी., हसानी, एस., श्वाब, एस., एवं हेल्मिख, एफ. (2026). Effects of a social participation intervention on primary school students' attitudes toward peers with disabilities. *Journal of Research in Special Educational Needs*, 26(1),